ओम् शान्ति 26-8-18 मधुबन

''दादी प्रकाशमणि जी की 11 वीं पुण्य स्मृति दिवस निमित्त शान्तिवन में हुए विशेष कार्यक्रम''

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा विश्व कल्याण की बेहद सेवा में उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी अति स्नेही साकार मात पिता के कदमों पर कदम रखने वाली, लव और लॉ के बैलेन्स द्वारा पूरे ब्राह्मण परिवार की पालना कर, सबके दिलों पर राज्य करने वाली मीठी दादी प्रकाशमणि जी का 11 वां पुण्य स्मृति दिवस ''विश्व बन्धुत्व दिवस'' के रूप में मनाया गया। शान्तिवन के मनमोहिनी वन से माउण्ट आबू के ओम् शान्ति भवन तक इन्टरनेशनल हाफ मैराथन का आयोजन 19 अगस्त को दादी प्रकाश-मणि जी की दिव्य स्मृति में किया गया, जिसमें पूरे विश्व से 1500 भाई बहिनों ने बड़े उमंग-उत्साह के साथ भाग लिया। उनमें से तीन-तीन विजताओं को विशेष पुरस्कार दिये गये। आबू तथा आबूरोड के सभी वी.आई.पीज के लिये, पत्रकारों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम रखे गये। सभी अपनी स्नेह श्रंधाजलि अर्पित करने के लिए शान्तिवन में प्रकाश-स्तम्भ पर आये। सभी ने यज्ञ का ब्रह्माभोजन पान किया तथा यज्ञ की तरफ से सबको याद सौगात भी दी गई। इस अवसर पर विशेष 3 वर्ष से 19 वर्ष के पुराने युगलों के लिए ''नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा'' योग तपस्या भट्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें पूरे भारतवर्ष से 15 हजार युगलों ने भाग लिया। 24 तारीख को विशेष दादी जी की पालना लिये हुए भाई बहिनों ने दादी जी के अंग-संग के संस्मरण सुनाये। 25 तारीख को विशेष मुरली क्लास के पश्चात सभी पुराने वरिष्ठ भाई बहिनों ने, टीचर्स ने प्रकाश-स्तम्भ पर पहुंचकर अपने श्रधासुमन, फूल मालायें अर्पित की। फिर सभी मातायें वा भाई प्रकाशस्तम्भ की परिक्रमा करते पुष्प अर्पित करते, दादी जी के स्नेह में समाये रहे। 10.30 बजे आदरणीय निर्वैर भाई ने दादी जी के कुशल नेतृत्व पर उनके साथ के अनुभव सुनाये। 12 बजे मधुबन की शशी बहन ने दादी जी के निमित्त विशेष बापदादा को भोग स्वीकार कराया। वतन के सन्देश का सार इस प्रकार है:

आज जब बाबा के पास वतन में पहुंची तो देखा प्यारे बाबा के साथ मीठी दादी जी भी खड़ी थी और सामने बहुत से भाई बहिनें हाथों में माला लेकर पहुंचे हुए थे जो दादी जी को पहनाते अपने श्रधासुमन अर्पित कर रहे थे। तो दादी मुस्कराते हुए बोली, यह श्रधासुमन नहीं लेकिन अभी तो हर एक को सम्पन्नता स्वरूप बनना है। हर एक अब अपने सम्पन्न स्वरूप को सामने रख ऐसा पुरुषार्थ करे। अब संगम पर फरिश्तों की सभा हो तब भविष्य में राज्य अधिकारियों की सभा होगी। थोड़े समय के बाद दादी जी के साथ पूरी एडवांस पार्टी भी वतन में इमर्ज हो गई, सबका चेहरा लाइट से ऐसे चमक रहा था जैसे हर एक अपने सम्पन्न स्वरूप में स्थित है। उन सबके बीच सामने स्टेज पर दादी जी देवी रूप में सजी हुई दिखाई दी। दादी जी के उस ईष्ट देवी रूप के नीचे बहुत सुन्दर लिखत थी - ''सर्व सिद्धि स्वरूप''। उसके बाद यह सीन मर्ज हो गया। सामने 4-5 गेट दिखाई दिये, जिसमें अलग-अलग वर्गो के लोग दिखाई दे रहे थे। उसके बीच एक बहुत सिम्पल गेट था, उस गेट पर बहुत से लोग थे। दादी जी ने उन्हें देखा तो सब पर लाइट पड़ने लगी। तो मैंने कहा दादी यह विशेष कौन हैं? तो दादी ने कहा यह सब परमात्मा के कार्य में मददगार, सच्चाई सफाई वाले, दिल से परमात्म चिंतन करने वाले बाबा के बच्चे हैं। दूसरे जो अन्य गेट पर थे वह भी सामने आये तो उनकी भी एक बहुत सुन्दर माला बन गई और सब जैसे यही वायदा कर रहे थे कि हम सब मिलकर विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनेंगे। तो बाबा ने कहा इस बच्ची ने ऐसे संगठन तैयार कर दिये हैं। बच्ची का हर संकल्प साकार हुआ है इसलिए बच्ची सिद्धि स्वरूप है। तो दादी कहती बाबा मैंने तो कुछ भी नहीं किया, यह सब तो आप कराने वाले हैं। ऐसी मीठी रूहरिहान सुनते

फिर मैंने दादी से पूछा दादी अभी आप क्या कर रही हैं? अभी तो आप 10-11 वर्ष की हो गई। तो दादी मुस्कराने लगी और बोली कि बाबा हम लोगों को हर रोज़ अमृतवेले सारे विश्व का भ्रमण कराते सबको सकाश दिलाते हैं। हमारे जो भी एडवांस पार्टी के साथी हैं, सभी विश्व परिवर्तन के प्लैन को चेक करते और करेक्शन भी करते हैं। हम ग्रुप के साथ ही चक्र लगाते हैं। अभी आप सबको भी जल्दी-जल्दी अपने को तैयार करना है फिर अपनी नई दुनिया में जाना है। बीच-बीच में बाबा मुझे आप सबके बीच में भी भेज देते हैं। मैं सब कुछ देखती हूँ। ऐसे दादी बहुत प्यार से सुना रही थी। फिर मैंने आप सबकी याद दी। विशेष जो युगल भट्ठी में आये हैं उन सबकी याद दी तो दादी बोली अब सभी को तीव्र पुरुषार्थ करके आगे बढ़ना है, अपने को सम्पन्न बनाना है। मधुबन निवासियों को याद देते हुए दादी ने कहा कि मधुबन तो विश्व के सामने आकर्षण का केन्द्र है। बहुत सुन्दर स्थान बाबा ने बनाकर दिया है, मधुबन निवासियों को तो सभी बहुत ऊंची नज़र से देखते हैं, इन्हें तो सबके आगे एक्जैम्पुल बनकर रहना है। फिर मैंने कहा दादी कल राखी का त्योहार है, आप सबको बहुत प्यार से राखी बांधती थी। आज मुन्नी बहन ने आपके लिए राखी भेजी है। तो दादी ने राखी हाथ में ली और बाबा को बांधने लगी तो उस राखी का जो धागा था वह इतना बड़ा होता गया जो सभी उसी एक राखी में ही बंधते गये। तो बाबा ने कहा बाबा और बच्चे अलग-अलग हो ही नहीं सकते। उस राखी से बहुत सुन्दर लाइट निकल रही थी, उस लाइट में वरदान लिखा हुआ था **''सिद्धि स्वरूप सफलता मूर्त भव''**। बाबा ने कहा बच्चे सदा सफलता प्राप्त करने के लिए एकनामी, एक के कार्य में सदा सहयोगी, संगठन में एकमत होकर रहना। समय प्रमाण अब हर एक को अपने सम्पन्न स्वरूप में रहकर संगठित रूप में सबको बाबा का साक्षात्कार कराना है, अभी इसी सेवा की जरूरत है। फिर मैंने कहा दादी आज आपके लिए यज्ञ का विशेष भोग लेकर आई हूँ। जब मैंने थाली सामने रखी तो दादी ने दृष्टि देते हुए अपने हाथों से बाबा को खिलाया और बाबा ने दादी को खिलाया और हम सबको देखकर कहा आप सब मुख खोलो, दादी जैसे सबके मुख में भोग खिला रही थी। हमारी दादी जानकी, दादी गुल्जार, सभी वरिष्ठ भाई बहिनें वतन में इमर्ज थे। फिर दादी ने कहा जैसे सभी एक दो के सहयोगी साथी बन सेवाओं को आगे बढ़ा रहे हो, ऐसे ही बढ़ाते चलो। बाबा तो साथ में है ही। ऐसे कहते बाबा ने और मीठी दादी ने सभी को बहुत प्यार से याद दी।

शाम के समय विशेष दादी जी के जीवन चरित्र पर घाटकोपर के बच्चों ने बहुत सुन्दर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। कुछ भाई बहिनों ने दादी जी के अंग संग के अनुभव सुनाये। आज तो रक्षाबंधन का पावन त्योहार है। सभी बहुत प्यार से राखी बंधवाते और अन्दर से दृढ़ संकल्प का वायदा करते हैं। आज अव्यक्त मुरली में भी मीठे बाबा ने हम सभी को वरदान माला की सौगात दी है। जरूर सभी ने इस वरदान माला को स्वयं में धारण किया होगा:-

1- सन्तुष्टता द्वारा सदा सन्तुष्ट रहकर सबको सन्तुष्ट करना। 2- सदा सरल स्वभाव, सरल बोल, सरलता सम्पन्न कर्म करना। 3- सदा एक की मत, एक से सर्व सम्बन्ध, एक से सर्व प्राप्तियां, ऐसे एक द्वारा सदा एकरस रहने के अभ्यासी बनना। 4- सदा खुश रहकर, खुशी का खजाना बांटते, खुशी की लहर फैलाना। 5- चेहरे पर सदा खुशी की मुस्कराहट रहे, सदा याद में वृद्धि करते आगे बढ़ते रहना।

इन्हीं वरदानों की माला सदा गले में पड़ी रहे। अच्छा-सभी को बहुत-बहुत याद और रक्षाबंधन की हार्दिक बधाईयां। ओम् शान्ति।